IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित दीपयज्ञ परम्परा का पर्यावरणीय संचार के संदर्भ में विश्लेषण

[1] नेहा सिंह, [2]प्रो. (डॉ.) सुखनंदन सिंह

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, [2] संकायाध्यक्ष, संचार संकाय,

[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

शोध सारांश:

विश्वभर में पर्यावरणीय ह्रास और प्रदूषण का बढ़ता संकट आज मानवता के सामने सबसे गंभीर चुनौती बन चुका है। ऐसे समय में विश्वसमुदाय को भोगौलिक, तार्किक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक समाधान की आवश्यकता है। जिस हेतु एक उत्कृष्ट संचार विधि की संभावना इस शोध पत्र के द्वारा प्रस्तुत की गयी है। भारत आस्था प्रधान राष्ट्र है। भारत की विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं में आध्यात्मिक उपक्रमों के माध्यम से समाज सुधार व सुव्यवस्था के प्रमाण प्राप्त होते हैं। यज्ञ को भी ऐसी ही एक आध्यात्मिक विधि के रूप में भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । यज्ञ न केवल एक सांस्कृतिक व आध्यात्मिक अनुष्ठान है बल्कि वह सामाजिक साम्यता एवं संचार का भी एक महत्वपूर्ण साधन रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार से संस्थापक एवं वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद का चिंतन विश्व को प्रदान करने वाले विचारक, तपस्वी एवं लेखक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित यज्ञ के विधि विधान के २ प्रमुख उद्देश्य रहे हैं : आतंरिक व्यक्तित्व का परिष्कार और बाह्य वातावरण की शुद्धि। इसी यज्ञ की मूल अवधारणा और सिद्धांतों को संगृहीत कर उन्होंने यज्ञ की प्रक्रिया को संक्षिप्त और सुलभ बनाते हुए दीप यज्ञ परम्परा का नवोन्मेष किया। इस अध्ययन के द्वारा शोधार्थी ने पंडित श्रीराम शर्मा द्वारा प्रतिपादित दीप यज्ञ पद्धति का अध्ययन पर्यावरणीय संचार के संदर्भ में किया है।

दीप यज्ञ को आचार्यश्री ने एक आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय जागरूकता के माध्यम के रूप में प्रतिपादित किया। इस यज्ञ-पद्धति में कम से कम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए प्रकृति के पंच तत्वों व कलश के रूप में ब्रह्मांड का प्रतीकात्मक पूजन किया जाता है। साथ ही देव दक्षिणा की विधि के साथ तरु मित्र/पुत्र जैसे अभियान को सम्मिलित कर क्रियात्मक शिक्षण के माध्यमों से पर्यावरण संचार का उदाहरण प्रस्तुत होता है। दीप यज्ञों में कम लागत, प्रतीकात्मकता, सामूहिकता और व्यवहार परिवर्तन जैसे तत्वों के माध्यम से एक प्रभावी प्रतिमान स्थापित होता है। अध्ययन में पर्यावरणीय संचार के समकालीन सिद्धांतों के आलोक में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रदत दीपयज्ञ पद्धति की भूमिका का विश्लेषण किया गया है, जिसके निष्कर्ष के रूप में दीपयज्ञ को एक सशक्त पर्यावरणीय संचार का माध्यम पाया गया है।

कूट शब्द - दीपयज्ञ, पर्यावरणीय संचार, प्रतीकात्मक क्रिया, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, सतत् विकास, यज्ञ परम्परा

प्रस्तावना

समकालीन विश्व एक अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकट से गुजर रहा है। जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता में तीव्र ह्रास, वायु और जल प्रदूषण, अनियंत्रित उपभोग संस्कृति और पर्यावरणीय असमानताएँ इत्यादि सभी संकेत करते हैं कि केवल वैज्ञानिक विशेषज्ञता, तकनीकी नवाचार या नीतिगत प्रयास इस संकट का समाधान नहीं कर सकते। वैश्विक शोध यह स्वीकार करता है कि पर्यावरणीय समस्याएँ उतनी ही सांस्कृतिक और व्यवहारगत हैं, जितनी वैज्ञानिक और भौतिक। ऐसे में यह स्पष्ट है कि स्थायी समाधान के लिए जनता के मूल्य-तंत्र, जीवनशैली, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक चेतना में गहरे, दीर्घकालिक परिवर्तन आवश्यक हैं।

पर्यावरणीय संचार (Environmental Communication) का क्षेत्र इसी आवश्यकता को समझते हुए यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता है कि पर्यावरण से संबंधित संदेश केवल 'सूचना' भर न हो, बल्कि वह संस्कृति, अर्थ-निर्माण, सामूहिक पहचान, परंपरा और भावनात्मक अनुभवों से गहराई से जुड़ा हो। इसलिए स्थिर, प्रभावी और सामुदायिक-स्तरीय परिवर्तन उन संचार प्रणालियों के माध्यम से अधिक आसानी से होते हैं, जो लोगों की सांस्कृतिक स्मृति, धार्मिक प्रतीक-तंत्र और सामूहिक अनुष्ठानों से मेल खाते हों। इस सम्बन्ध में एंटोनोपोलोस और कैरियोटाकिस (2020) बताते हैं कि पर्यावरणीय संचार वह प्रक्रिया है जिसमें पर्यावरण से संबंधित जानकारियों का प्रसार तथा संचार प्रथाओं का क्रियान्वयन शामिल होता है। उनके अनुसार, शुरुआत में पर्यावरणीय संचार एक सीमित क्षेत्र था; लेकिन आज यह एक व्यापक अध्ययन-क्षेत्र बन चुका है, जिसमें यह शोध किया जाता है कि विभिन्न घटक जैसे संस्थान, राज्य, समुदाय, व्यक्ति पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर किस प्रकार संवाद करते हैं और सांस्कृतिक उत्पाद समाज को पर्यावरणीय विषयों की ओर कैसे प्रभावित करते हैं। यह परिभाषा लेखक की रुचि इसलिए आकर्षित करती है क्योंकि यह पर्यावरणीय संचार का एक समग्र और सर्वांगीण दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इसमें पर्यावरणीय संचार और विभिन्न 'अभिनेताओं' के बीच होने वाले पारस्परिक संवाद को रेखांकित किया गया है, जो आगे चलकर पर्यावरणीय संचार के व्यवहारिक पहलुओं पर विचार-विमर्श का मार्ग तैयार करता है।

भारतीय संदर्भ में देखें तो यहाँ की सांस्कृतिक मनोभूमि मूलतः धार्मिक-प्रतीकात्मक रही है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक सम्मेलनों, व्रत अनुष्ठानों, कथा, पर्व-त्यौहारों एवं यज्ञों जैसे सामाजिक-आध्यात्मिक आयोजनों के द्वारा सामूहिक रूप से वैचारिक एवं सैद्धांतिक आदान-प्रदान होना भारत में अति सामान्य है। इन परंपराओं की विशेषता यह है कि वे ज्ञान को केवल बौद्धिक निर्देश के रूप में नहीं, बल्कि अनुभवात्मक, भावनात्मक और सामुदायिक भागीदारी के रूप में संप्रेषित करती हैं। इसलिए भारतीय परंपराएँ, विशेषकर यज्ञ-आधारित परंपराएँ, पर्यावरणीय संचार के लिए एक उपजाऊ, समग्र और प्रभावी माध्यम बन सकती हैं।

भारतीय सांस्कृतिक मनोभूमि की धार्मिक-प्रतीकात्मक प्रकृति को समझने के लिए अनुष्ठानों और पर्वों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सिंह एवं भावसार (2025) के अध्ययनों से यह स्पष्ट है की मंत्र, यज्ञ, कथा और उत्सव जैसे तत्व सामाजिक-नैतिक मूल्यों तथा सामूहिक चेतना के सशक्त वाहक के रूप में कार्य करते हैं। राणा और शर्मा (2025) के अनुसार, प्राचीन भारतीय परंपराएँ प्रकृति के साथ सामंजस्य को अनुभवात्मक और भावनात्मक रूप से संप्रेषित करती हैं, जैसे सूर्य अर्घ्य, पवित्र वृक्षारोपण या मकर संक्रांति जैसे पर्व जो कृषि चक्रों के सम्मान के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं, न कि केवल बौद्धिक निर्देशों के जरिए। यज्ञ-आधारित परंपराएँ, जो प्राकृतिक जड़ी-बूटियों के उपयोग से पर्यावरणीय शुद्धिकरण को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करती हैं, पर्यावरणीय संचार के लिए एक उपजाऊ मंच सिद्ध होती हैं, क्योंकि ये सामूहिक सेवा और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से नैतिक जागरूकता को भावनात्मक गहराई प्रदान करती हैं, जिससे आधुनिक सतत विकास लक्ष्यों जैसे जल संरक्षण और भूमि संरक्षण को समग्र रूप से मजबूत किया जा सकता है। इस प्रकार ये परंपराएँ न केवल पारिस्थितिक संतुलन को पुनर्जीवित करती हैं, बल्कि सामाजिक एकजुटता को भी गहराती हैं, जो पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में प्रभावी साबित हो सकती हैं।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित यज्ञ दर्शन एवं दीप यज्ञ पद्धति:

सिंह एवं भावसार (2024) के अध्ययन के अनुसार पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने यज्ञ की प्राचीन भारतीय परंपरा के दर्शन और विज्ञान को पर्यावरण तथा मनोवैज्ञानिक शुद्धि के लिए पुनर्जीवित करने पर बल दिया। उनके अनुसार यज्ञीय परंपरा के दो प्रमुख उद्देश्य हैं: व्यक्तित्व परिष्कार एवं वातावरण की शुद्धि (ब्रह्मवर्चस, 1998)। वर्तमान समय में नैतिक एवं चारित्रिक पतन की स्थिति दो विश्वयुद्धों के काल जैसी ही है, जिसके कारण व्यक्ति का अंतःकरण व प्राकृतिक वातावरण दोनों ही गंभीर रूप से दूषित हो गए हैं और इसका प्रतिकूल प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ रहा है । इस समस्या के समाधान हेतु उन्होंने यज्ञ को सूक्ष्म वातावरण की शुद्धि के प्रभावी साधन के रूप में प्रचारित किया और उनके विभिन्न आन्दोलनों में यज्ञ को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इस दर्शन का एक प्रमुख आयाम व्यक्ति के भीतर 'देने' की भावना का होना है। 'इदं न मम' के भाव से यज्ञ में भाग लेने वाले यज्ञकर्ता अपनी करुणा, प्रयास और संसाधनों का एक अंश प्रकृति एवं

समाज के कल्याण हेतु अर्पित करते हैं (ब्रह्मवर्चस, 1998)। यह जिम्मेदारी का भाव व्यक्ति की मनोवृत्ति के सकारात्मक पुनर्गठन में सहायक होता है और दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन कर समग्र कल्याण को प्रोत्साहित करता है। मिश्रा एवं मिश्रा (2024) के अनुसार वर्तमान समय की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण मनुष्य की दूषित विचारधारा और भावनाएँ हैं, जिनसे ईर्ष्या, अहंकार, लोभ, असंतोष जैसी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। यज्ञ के दार्शनिक सिद्धांत सूक्ष्म चेतना और वातावरण की शुद्धि के माध्यम से इन प्रवृत्तियों का निवारण कर सकते हैं, जिससे मानवीय मूल्यों का विकास और वैश्विक समस्याओं का समाधान संभव है।

सिंह एवं कुमार (2024) के अनुसार भारतीय संस्कृति में यज्ञ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है; इसे वैदिक परंपरा का मेरुदंड माना गया है। यज्ञ को भारतीय संस्कृति का आधारस्तंभ और सृष्टि की धुरी कहा गया है। वेद, धर्मशास्त्र और श्रीमद भगवद गीता जैसे ग्रंथों में यज्ञ की महिमा का व्यापक वर्णन मिलता है। वस्तुतः यज्ञ केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक चिंतन, दर्शन और साधना-पद्धति है। सिंह,एस. (2019) के अनुसार यज्ञ व्यक्तित्व के रुपाँतरण का एक गहरा मनो-आध्यात्मिक प्रयोग है, जिससे मनुष्य के प्रसुप्त देवत्व के जागरण का प्रयोजन सिद्ध होता है। आश्चर्य नहीं कि गायत्री को जहाँ भारतीय संस्कृति की माता कहा गया है, वहीं यज्ञ को पिता की संज्ञा दी गई है। भारतीय संस्कृति के शाश्वत जीवन मूल्यों का प्रवाह यज्ञमय परंपरा के कारण ही संभव हुआ है।

डॉ. प्रणव पंड्या (2008) के अनुसार यज्ञ देवसंस्कृति का आधार है, जिसमें परमार्थ, त्याग, बलिदान और सद्भाव का समन्वित क्रियान्वयन निहित है। अग्निहोत्र जैसे यज्ञीय प्रयोग इन प्रवृत्तियों को पुष्ट करने के लिए साधना के रूप में किए जाते रहे हैं। उच्च आदर्शों को जीवन में उतारने के लिए किए गए संकल्पित प्रयासों को भी यज्ञ कहा गया है। अखंड ज्योति पत्रिका में डॉ. प्रणव पंड्या (2009) द्वारा सम्पादित एक लेख के अनुसार ज्ञान यज्ञ, भूदान यज्ञ, नेत्रदान यज्ञ जैसे शब्द इसके प्रमाण हैं, जिनमें अग्निहोत्र नहीं होता, फिर भी इन्हें यज्ञ माना जाता है। इसी प्रकार जप यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ और दीप यज्ञ जैसे रूपों का उल्लेख मिलता है। इस संदर्भ में दीपयज्ञ की महत्ता और भूमिका को समझा जा सकता है। दीप यज्ञ यज्ञीय जीवन के मूल भावों को समाहित करने वाला पारंपरिक यज्ञ का एक समयानुकूल एवं युगानुकूल अभिनव स्वरूप है, जिसे युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने गहन चिंतन के पश्चात मूर्त रूप प्रदान किया। यह प्रयोग व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण मानवता को युगनिर्माण की विचारधारा से अनुप्राणित करने के उद्देश्य से किया गया था, जो उस समय की आवश्यकता भी थी। सिंह एवं कुमार (2024) द्वारा किये गए विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि आचार्यजी के अनुसार, दीपक सर्वमान्य दिव्यता का प्रतीक है; इसी को केंद्र में रखकर यज्ञीय वातावरण का निर्माण कर जनमानस को संस्कारित करने का यह प्रयास हर दृष्टि से अद्वितीय और विवेकसम्मत कहा जा सकता है। वास्तव में पारंपरिक यज्ञों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए ही दीप यज्ञों की श्रृंखला का शुभारंभ किया गया।

पारम्परिक यज्ञ वनाम दीप यज्ञ - एक विश्लेषण

सिंह एवं कुमार (2024) के द्वारा किये गए अध्ययन में यह पाया गया कि समय के साथ यज्ञ महंगे, जटिल, कर्मकाण्ड प्रधान और सीमित समुदायों तक सिमट गए। इससे वे न केवल जनमानस से दूर हुए, बल्कि उनकी पर्यावरणीय और सामाजिक क्षमता भी कमजोर पड़ी। ऐसे समय में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने यज्ञ परंपरा का नवोन्मेष किया। उसे सरल, सहज, वैज्ञानिक, नैतिक एवं सर्वसुलभ रूप प्रदान किया। पारम्परिक यज्ञ, यद्यपि भारतीय समाज में व्यापक रूप से स्वीकृत रहे हैं, तथापि उनकी कुछ स्पष्ट सीमाएँ विद्यमान हैं। ऐसे यज्ञ प्रायः अधिक स्थान घेरते हैं, सम्पन्न होने में लंबा समय लेते हैं, तथा इनका व्यय भी अपेक्षाकृत अधिक होता है। इनके मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान जटिल होने के कारण सामान्य व्यक्तियों हेतु इन्हें सहज रूप से ग्रहण करना कठिन हो जाता है। परिणामस्वरूप, समाज के विविध वर्गों में इनकी स्वाभाविक स्वीकृति सीमित रह जाती है।

आचार्यश्री (1997) ने अपनी पुस्तक 'दीप यज्ञ क्यों? कैसे?' में यह उल्लेख किया है कि पारम्परिक यज्ञ अनुष्ठानों को समय के साथ इतना जटिल एवं समय-साध्य रूप दे दिया गया है कि वे जनसाधारण के स्तर पर प्रभावी रूप से प्रयुक्त ही नहीं हो पाते। विविध नियम–निषेध, पुरोहितों द्वारा अपेक्षित दीर्घ दान-दक्षिणा तथा यज्ञ की उपयोगिता के प्रामाणिक एवं विवेकसम्मत स्पष्टीकरण के अभाव जैसे कारकों ने आम जनता में इनके प्रति संकोच उत्पन्न किया है। यज्ञ कराने वाले एवं करने वाले, दोनों पक्षों की अपनी-अपनी सीमाएँ रही हैं; कर्मकाण्ड संपन्न कराने वाले पक्ष द्वारा कर्म की उपादेयता स्पष्ट न कर पाना तथा सहभागी पक्ष का पूर्ण निष्ठा से सहयोग न दे पाना, दोनों मिलकर इस परम्परा की गति को बाधित करते हैं।

दीप यज्ञ की संरचना: प्रतीक, रूपक और सामूहिक ऊर्जा

दीप यज्ञ की संरचना अत्यंत सरल दिखाई देती है, किंतु उसके पीछे निहित प्रतीकात्मक महत्व गहन दार्शनिक और पारिस्थितिक अर्थ रखता है। सबसे प्राथमिक तत्व है एक थाली का वेदी-रूपांतरण। इस परिवर्तन के मूल में मात्र सामग्री के अभाव का समाधान नहीं, बल्कि किसी भी स्थान, चाहे वो घर, आँगन, विद्यालय अथवा सामुदायिक परिसर हो, को पवित्र, सामूहिक और आध्यात्मिक बनाने का भाव भी था। एक साधारण थाली का वेदी बन जाना यह दर्शाता है कि पवित्रता किसी विशिष्ट भौतिक संरचना में नहीं, बल्कि संकल्प, सहभागिता और चेतना में निहित है। इसे कर्मकाण्डीय लोकतांत्रिकरण (ritual democratization) का उदाहरण भी माना जा सकता है, जहाँ धार्मिक अनुष्ठान किसी विशेष जाति, वर्ग या आर्थिक संरचना पर निर्भर नहीं रह जाता।

आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा (1987) ने दीप यज्ञ की अवधारणा प्रमुख चार अभियानों को ध्यान में रखकर दी, जो इस प्रकार है -

१. प्रौढ़ शिक्षा का व्यापक प्रचार,

२. बिना खर्च की शादियाँ,

३. नशा उन्मूलन एवं

४. हरीतिमा संवर्धन

हरीतिमा संवर्धन अभियान के अंतर्गत दीप यज्ञों के माध्यम से आचार्यश्री ने पर्यावरण संरक्षण के सन्देश को फैलाने की प्रेरणा प्रदान की। उनके अनुसार दीप यज्ञ के कर्मकांड में संकल्प की विधि में यह संकल्प दिलाया जाना चाहिए कि जिनके पास भी जमीन है, वे पेड़ लगाएं और शुद्ध वायु के प्रसार व प्रदूषण निवारण के पुण्य कार्य को करें। इसके अतिरिक्त दीप यज्ञों के माध्यम से उन्होंने घरों में शाक वाटिका, आंगनवाड़ी, छप्परवाडी, छतवाडी जैसी गतिविधियों की प्रेरणा दी। इस प्रकार उन्होंने सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए उपरोक्त चार कार्यों को दीप यज्ञों की श्रृंखला के माध्यम से करने का अभियान चलाया जो आज भी देश विदेश में प्रचलित है।

जन्म दिवसोत्सव पर दीप यज्ञ :

आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा (2022) द्वारा दीप यज्ञ को जन्म दिवस और विवाह दिवस मनाने का एक अनोखा उपक्रम बताया गया है। इस पुरे आयोजन में उन्होंने सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। दीप यज्ञ के प्रारंभिक कर्मकांड में ही पृथ्वी पूजन को स्थान दिया गया है, जिससे याजक के मन में प्रकृति एवं पृथ्वी के प्रति कृतज्ञता का भाव विकसित हो। साथ ही जन्म दिवस के समारोह के लिए आयोजित होने वाले दीपयज्ञ को पर्यावरणीय संचार का माध्यम मानने के कई आधार हैं।

- पंचतत्व पूजन: आयुर्वेद के अनुसार पंचतत्व जैसे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर मनुष्य शरीर बनता है। इन तत्वों के प्रतीकात्मक पूजन से व्यक्ति में यह चेतना विकसित होती है कि जीवन और संसाधन इन्हीं तत्वों पर आधारित हैं, अतः उनका दुरुपयोग न हो और संरक्षण सुनिश्चित हो। दीपक, जो सर्वमान्य दिव्यता का प्रतीक है, को केंद्र में रखकर यज्ञीय वातावरण का निर्माण किया जाता है, जिससे जनमानस में संयमित जीवनशैली और पर्यावरणीय संतुलन के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। इस प्रकार दीप यज्ञ न केवल सांस्कृतिक परंपरा का संवाहक है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाला प्रभावी माध्यम भी है।
- देव दक्षिणा: आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित दीप यज्ञ के कर्मकांड में देव दक्षिणा का एक महत्वपूर्ण क्रम रखा है। इस क्रम में आमंत्रित देव शक्तियों को दक्षिणा के रूप में एक बुरी आदत को अर्पित किया जाता है एवं एक अच्छी आदत को ग्रहण किया जाता है। इस क्रम में पिछले कई वर्षो से अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा देव दक्षिणा के रूप में एक वृक्ष लगाने का संकल्प ग्रहण कराया जाता है। साथ ही देव दक्षिणा की विधि के साथ तरु मित्र/पुत्र जैसे अभियान को सम्मिलित कर क्रियात्मक शिक्षण के माध्यमों से पर्यावरण संचार का उदाहरण प्रस्तुत होता है।

दीप यज्ञ एवं पर्यावरण संचार के कुछ जीवंत उदाहरण -

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रदत सप्त सूत्री आंदोलनों में पर्यावरण संरक्षण भी एक प्रमुख आंदोलन है। इस आंदोलन के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों के द्वारा अखिल विश्व गायत्री परिवार के कार्यकर्ता विभिन्न शाखाओं के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। दीप यज्ञ के माध्यम से जो गतिविधियाँ चल रही हैं, उसके कुछ जीवंत उदाहरण प्रस्तुत हैं:

१. कोटा (राजस्थान) के हर्षवीर राठौर व उनकी टीम (2025) ने प्रकृति-आधारित पुनरुद्धार को जनआंदोलन का रूप देते हुए अब तक 6,000 से अधिक पौधों का रोपण कर "श्रीराम स्मृति उपवन" को साकार किया है। झालावाड़ रोड स्थित वन विभाग की 60 एकड़ भूमि पर उन्होंने श्रमदान, सेवा और सामूहिक प्रयासों से उपवन विकसित किया। हर्षवीर राठौर दीप-यज्ञों और सामुदायिक उत्सवों को 'पर्यावरण-केंद्रित आयोजन' बनाते हैं, जहाँ वृक्षारोपण, जल-संरक्षण और प्लास्टिक-मुक्ति पर विशेष बल दिया जाता है। उनकी टीम स्थानीय युवाओं और परिवारों को जोड़कर संरक्षण, सिंचाई और बाड़बंदी जैसी अनिवार्य गतिविधियों को भी नियमित रूप से निभाती है।

२. जैसलमेर (राजस्थान) की मनीषा छंगानी (2025) ने 2013 से अपने प्रयासों को संगठित अभियान का रूप देते हुए "प्रत्येक रविवार वृक्षारोपण" का संकल्प लिया, जिसने स्थानीय लोगों, युवाओं, महिलाओं और बच्चों को प्रकृति-संरक्षण से जोड़ने की नई शुरुआत की। उनके नेतृत्व में दो "श्रीराम स्मृति उपवन" विकसित हुए, जो वृक्ष समूह भर नहीं, बल्कि पर्यावरण-संचार और सामुदायिक जागरण के जीवंत केंद्र बन गए। वे दीप-यज्ञों को 'ग्रीन रिचुअल' का रूप देते हुए इन्हीं आयोजनों के माध्यम से वृक्षारोपण, जल-संरक्षण और प्लास्टिक-मुक्ति का संदेश समाज तक पहुँचाती हैं। उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि 2000 पंचवटी स्थापित करना है, जिसे वे केवल पाँच पौधों के रोपण का कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक "पवित्र वन-विचार" का पुनर्जीवन मानती हैं। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं और परिवारों में पंचवटी को प्रकृति-श्रद्धा, कृतज्ञता और संरक्षण की परंपरा के रूप में स्थापित किया हैं।

३. बारां (राजस्थान) के डॉ. मुकेश मीणा (2025) ने आचार्यश्री की पुस्तकों से प्रेरित होकर 2004 से पर्यावरण-संरक्षण को जन आंदोलन का रूप दे रहे हैं। उन्होंने प्रकृति को "नैतिक-आध्यात्मिक दायित्व" मानते हुए अब तक 40,000 से अधिक पौधों का रोपण और संरक्षण किया है। उनकी टीम स्मृति-वृक्ष, पंचवटी, प्लास्टिक-मुक्ति, जल-संरक्षण कार्यशालाएँ और तालाबों के पुनर्जीवन जैसे कार्यक्रमों को निरंतर आगे बढ़ा रही है, जिससे क्षेत्र में जल-धारण क्षमता और जैव-विविधता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। डॉ. मीणा दीप-यज्ञों और सामाजिक उत्सवों को 'ग्रीन कार्यक्रम' बनाकर वृक्षारोपण और पर्यावरण-जागरूकता को सामुदायिक संस्कृति का हिस्सा बना रहे हैं।

४. अहमदाबाद (गुजरात) के डॉ. सिद्धार्थ ओझा व उनकी टीम (2025) ने अब तक 14,000 से अधिक पौधे लगाकर उनके संरक्षण की व्यवस्थित व्यवस्था विकसित की है। उनकी पहल में ग्रीन कॉरिडोर, औषधीय वाटिकाएँ, जल-संरक्षण कार्यशालाएँ और शहरी झीलों की सफाई जैसे कार्य शामिल हैं। अखण्ड ज्योति की प्रेरणा से वे दीप-यज्ञों और सामाजिक उत्सवों को 'ग्रीन सेलिब्रेशन' बनाकर वृक्षारोपण, प्लास्टिक-मुक्ति और पर्यावरण-जागरूकता को बढ़ावा देते हैं। उनकी "बाल संस्कारशाला" विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ वे बच्चों में प्रकृति के प्रति संवेदना और वैज्ञानिक समझ विकसित करते हैं।

इस प्रकार दीप यज्ञ भारतीय जीवन-पद्धति में एक ऐसी प्रणाली के रूप में विकसित हुआ, जिसमें पर्यावरणीय संतुलन, सामाजिक एकता, मानसिक शुद्धि और नैतिक जीवन चारों एक ही संचार-संरचना में समाहित हैं। आचार्यश्री के अनुसार दीपयज्ञ केवल 'दीप जलाने का कार्यक्रम' नहीं, बल्कि एक "संयुक्त पर्यावरणीय और नैतिक सुधार आंदोलन" है जो व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति, इन चार वृत्तों को एक साथ सम्बोधित करता है। दीपयज्ञ बहुत छोटे स्तर पर (एक थाली एक वेदी) और बहुत व्यापक स्तर पर भी (हज़ारों दीपक) आयोजित किया जा सकता है। इसकी विशेषता यह है कि यह प्रतीकात्मक–संचार के माध्यम से लोगों की आस्था, भावनाओं और सामूहिक ऊर्जा को जाग्रत करता है।

पर्यावरणीय व्यवहार परिवर्तन: सत्प्रवृत्ति-संवर्धन और सतत् विकास की दिशा

इस तरह स्पष्ट है कि दीपयज्ञ की शक्ति केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि व्यवहारिक भी है। आचार्य जी द्वारा हरीतिमा संवर्धन का आंदोलन प्रत्यक्ष पर्यावरणीय पुनरोद्धार (ecological restoration) का प्रयास है। वृक्षारोपण, घरों की शाक-भाजी वाटिका, छतवाड़ी, आँगनवाड़ी जैसे रूप लोगों को प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ते हैं। यह एसडीजी-13 (जलवायु क्रिया) और एसडीजी-15 (जमीन पर जीवन) के अनुरूप है।

इस अध्ययन में दीपयज्ञ को केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक अनुष्ठान-आधारित पर्यावरणीय व्यवहार परिवर्तन की वास्तुकला (environmental behaviour change architecture) के रूप में प्रस्थापित किया गया है।

- यज्ञ एक प्रतीकात्मक क्रिया-प्रणाली (Symbolic Action Theory): केनेथ बर्क (1989) की प्रतीकात्मक क्रिया-प्रणाली कहती है कि मनुष्य "प्रतीक-उपयोगी प्राणी" हैं और उनके अधिकांश व्यवहार प्रतीकों के माध्यम से संचालित होते हैं। दीप यज्ञ पूर्ण रूप से प्रतीकात्मक पद्धति है। दीपक, पांच तत्व पूजन, कलश पूजन, आहुति, वृक्षारोपण इत्यादि सब प्रतीक हैं जिनमें अर्थों की अनेक परतें निहित हैं। दीपयज्ञ में यही प्रतीक आत्मपरिष्कार और पर्यावरणीय नैतिकता का सांस्कृतिक संचार करते हैं। प्रतीकों की यह ऊर्जा लोगों के भीतर नैतिक प्रेरणा और पर्यावरणीय संवेदना जगाती है। इस प्रकार दीपयज्ञ एक प्रतीकात्मक पर्यावरणीय कार्य बन जाता है।
- संचार का संवैधानिक मॉडल (Constitutive Model of Communication): रोबर्ट क्रैग (2015) द्वारा प्रतिपादित संचार का संवैधानिक मॉडल यह मानती है कि संचार केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि सामूहिक पहचान (collective identity) का निर्माण करता है। दीपयज्ञ इसी प्रकार की पहचान-निर्माण प्रक्रिया को जन्म देता है। इसमें व्यक्ति स्वयं को प्रकृति, समुदाय और व्यापक सामाजिक ताने-बाने से जुड़ा हुआ अनुभव करता है। सामूहिक संकल्प और मंत्रोच्चार समुदाय को स्थिरता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करते हैं। इससे एक सामूहिक पारिस्थितिक स्व (ecological self) की पहचान उभरती है जो प्रकृति के प्रति संवेदनशील और दायित्वनिष्ठ होती है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन दर्शाता है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित दीपयज्ञ परम्परा भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित एक अत्यंत प्रभावी पर्यावरणीय संचार मॉडल है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रतीकों, सामूहिक सहभागिता और भावनात्मक प्रेरणा के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना को गहराई से स्थापित करने की प्रक्रिया है। आधुनिक पर्यावरणीय संकट, जिसे अक्सर तकनीकी समाधानों और नीतिगत उपायों से संबोधित किया जाता है, वास्तव में लोगों के व्यवहार, मान्यताओं और सांस्कृतिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जा सकता है और दीपयज्ञ इसी परिवर्तन को सहज रूप से उत्प्रेरित करता है।

दीपयज्ञ की प्रतीकात्मक भाषा इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। दीपक, पंचतत्त्व पूजन, मंत्रोच्चार और संकल्प जैसी प्रक्रियाएँ ऐसी सांस्कृतिक भाषा बनाती हैं जो व्यक्ति को प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, संतुलन और जिम्मेदारी के मूल्यों से जोड़ती हैं। केनेथ बर्क के प्रतीकवाद सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य का व्यवहार प्रतीकों से प्रभावित होता है, और दीपयज्ञ इन्हें पर्यावरणीय संदेशों के वाहक के रूप में स्थापित करता है। इस अनुष्ठान की सरलता और सर्वसुलभता इसे व्यापक स्तर पर उपयोगी बनाती है। कोई भी व्यक्ति इसे न्यूनतम सामग्री से कहीं भी कर सकता है, जिससे यह दैनिक जीवन का हिस्सा बनकर व्यवहार परिवर्तन को स्वाभाविक दिशा देता है। जन्मदिन, विवाह-वर्षगाँठ आदि अवसरों पर दीपयज्ञ का समावेश उपभोग-प्रधान उत्सवों को कृतज्ञता, संयम और पर्यावरण-संवेदनशीलता से जोड़ देता है। वृक्षारोपण, जल-संरक्षण या हानिकारक आदतों के त्याग जैसे संकल्प प्रतीकों को प्रत्यक्ष कर्म में बदलते हैं।

दीपयज्ञ की सामूहिकता साझा पर्यावरणीय पहचान का निर्माण करती है। सामूहिक मंत्रोच्चार और संकल्प रोबर्ट क्रैग द्वारा दिए गए संचार के संवैधानिक मॉडल के अनुसार संचार को सामाजिक वास्तविकता निर्माण का माध्यम बना देते हैं, जिससे पर्यावरणीय जिम्मेदारी केवल विचार नहीं, बल्कि भावनात्मक प्रतिबद्धता बन जाती है। समग्रतः, दीपयज्ञ एक जैव-सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामुदायिक संचार मॉडल है, जो एसडीजी-13 और एसडीजी-15 के अनुरूप सतत् पर्यावरणीय व्यवहार को बढ़ावा देता है। यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि पर्यावरणीय परिवर्तन तब अधिक प्रभावी होता है जब वह संस्कृति, प्रतीकों और सामूहिक चेतना के सहारे लोगों के जीवन में सहज रूप से समाहित हो। अंततः, दीपयज्ञ यही संदेश देता है - प्रकृति तब बदलती है, जब मनुष्य भीतर से बदलता है।

सन्दर्भ सूची:

1. एंटोनोपोलोस, एन., एवं कैरियोटाकिस, एम.-ए. (2020). पर्यावरणीय संवाद। द सेज इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ मास मीडिया एंड सोसाइटी (खंड 1, पृ. 550–552) में। https://doi.org/10.4135/9781483375519.N221
2. ब्रह्मवर्चस। (1998). यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान (हिन्दी)। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य समग्र वांग्मय (खंड 25) में। अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा। पृष्ठ संख्या २-२८, ४-१६, ९-१
3. बर्क, के. (1989). संकेत और समाज पर। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
4. क्रेग, आर. टी. (2015). संवैधानिक मेटामॉडल: 16-वर्षीय समीक्षा। कम्युनिकेशन थ्योरी, 25(4), 356–374।
5. मिश्रा, एस., एवं मिश्रा, ए. (2024). यज्ञ द्वारा सूक्ष्म लोक की शुद्धि: दार्शनिक सिद्धांत एवं वैश्विक शांति तथा कल्याण हेतु निहितार्थ। देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल, 23, 14–23।
6. पंड्या, पी. (संपा.). (2008). यज्ञ एक शिक्षण भी, उच्चस्तरीय विज्ञान भी (हिन्दी)। अखण्ड ज्योति मैगज़ीन, २००८, अंक - जुलाई, पृष्ठ संख्या ४६-४७। मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान।
7. राणा, आर., एवं शर्मा, एल. (2025). हिंदू अनुष्ठानों के माध्यम से सतत विकास की खोज। जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज़ एंड इनोवेटिव रिसर्च, 12(9), 500–504।
8. शर्मा, एस. (1987). दीपयज्ञ क्यों? कैसे?, शांतिकुंज, हरिद्वार। पृष्ठ संख्या ४ - ७।
9. शर्मा, एस. (2022). कर्मकांड भास्कर (हिन्दी)। मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट। पृष्ठ संख्या २९८ - ३००
10. सिंह, एस. (2019). वैदिक संस्कृति में यज्ञ – एक समग्र जीवन दर्शन एवं साधना पथ, पृ.4. Interdisciplinary Journal of Yagya Research 2(2):01-06, DOI:10.36018/ijyr.v2i2.45
11. सिंह, एन., एवं भावसार, जे. (2024). पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा व्याख्यायित अश्वमेध यज्ञ: जनसंचार का अद्वितीय प्रयोग। इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ यज्ञ रिसर्च, 7(2), 12–17।
12. सिंह, एन., सिंह, एस., एवं भावसार, जे. (2025). पवित्र सांकेतिकता और सततता: भारतीय उत्सव पर्यावरणीय संवाद एवं व्यवहार परिवर्तन की प्रणालियों के रूप में। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 13(11), e479–e493।
13. सिंह, एस., एवं कुमार, डी. (2024). दीप यज्ञ की क्रांतिकारी दृष्टि और युग-परिवर्तनकारी संभावनाएँ। इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ यज्ञ रिसर्च, 7(1), 1–8। https://doi.org/10.36018/ijyr.v7i1.119

व्यक्तिगत साक्षात्कार

1. साक्षात्कार, हर्षवीर राठौर, 19 नवंबर 2025
2. साक्षात्कार, मनीषा छंगानी, 02 अक्टूबर 2025
3. साक्षात्कार, डॉ. मुकेश मीणा, 28 अक्टूबर 2025
4. साक्षात्कार, डॉ. सिद्धार्थ ओझा, 28 अक्टूबर 2025